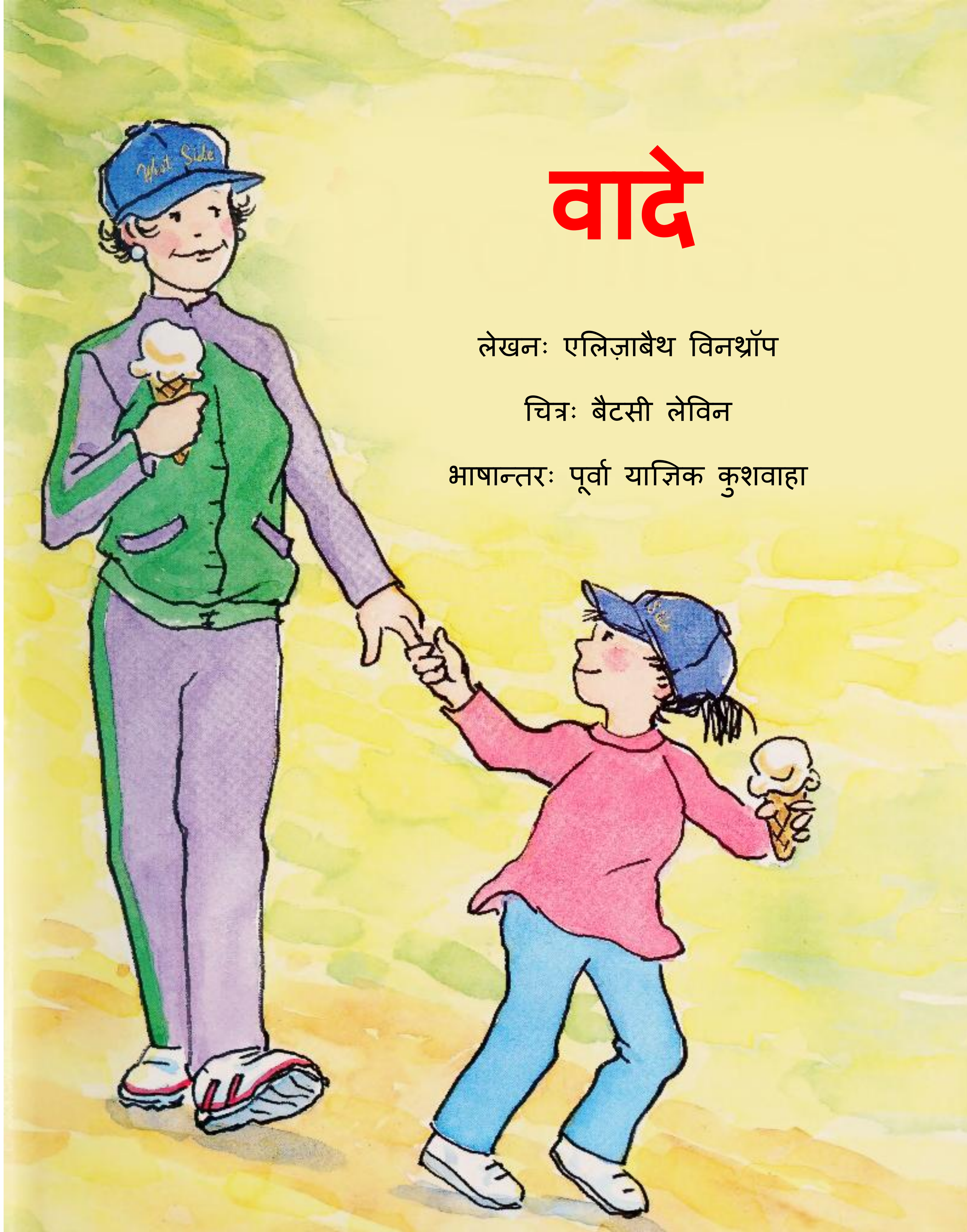
वादे

लेखनः एलिज़ाबैथ विनथ्रॉप

चित्रः बैटसी लेविन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





सारा को वह समय याद है जब माँ बीमार नहीं थी। वह पार्क में होने वाली दौड़ों में हिस्सा लिया करती थी। उसके ढ़ेर सारे काले, घुंघराले बाल थे। पर अब वह हमेशा थकी रहती है, और बार-बार अस्पताल जाती है। कभी तो रात भी वहीं बिताती है। उसके सारे बाल झड़ गए हैं। इसलिए उसका चेहरा बड़ा ही अजीब-सा लगता है। सारा को पहले जैसा सब कुछ था, उसकी कमी खलती है।

पर एक दिन सारा को सूझ जाता है कि वह माँ को दिखने में दूसरों जैसा कैसे बना सकती है। जल्द ही माँ बेहतर महसूस करने लगती है। हालांकि माँ यह वादा नहीं कर सकती कि वह फिर कभी बीमार नहीं होगी, पर वह कई दूसरे वादे कर सकती है।

मनोहारी चित्र कहानी को जीवन्त बनाते हैं, जो अपनी माँ की बीमारी से जूझती एक नन्ही की उम्मीदों का मार्मिक बयान है।



जे.एल.एम. के लिए

- ई. डब्ल्यू.

डिलिस इवान्स को

-बी. एल.

वादे

लेखनः एलिज़ाबैथ विनथ्रॉप

चित्रः बैटसी लेविन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा







मेरी माँ बीमार है।

वह बार-बार अस्पताल जाती है।

कभी दो दिनों के लिए

और कभी और भी लम्बे समय के लिए।

जब माँ घर छोड़ती है

मैं उसे ज़ोर से झप्पी देती हूँ।

एक बार तो वह लड़खड़ा ही गई

मैंने इतनी ज़ोर से झप्पी जो दी थी।

वह भी पलट कर मुझे झप्पी देती है

और फुसफुसा कर कहती है, कि वह मुझे प्यार करती है

यह भी कि वह जल्द ही घर लौटेगी।

पर जब वह लौटती है,

वह बेहद थकी नज़र आती है

उसका चेहरा ज़र्द दिखने लगता है

और वह सीधे बिस्तर पर पड़ जाती है

और सप्ताह भर वहीं पड़ी रहती है।

मुझे वह कतई पसन्द नहीं जो वे अस्पताल में उसके साथ करते हैं।

डैडी कहते हैं कि वे उसे ठीक कर रहे हैं।

पर मुझे तो लगता है कि वे उसकी हालत बिगाड़ रहे हैं।



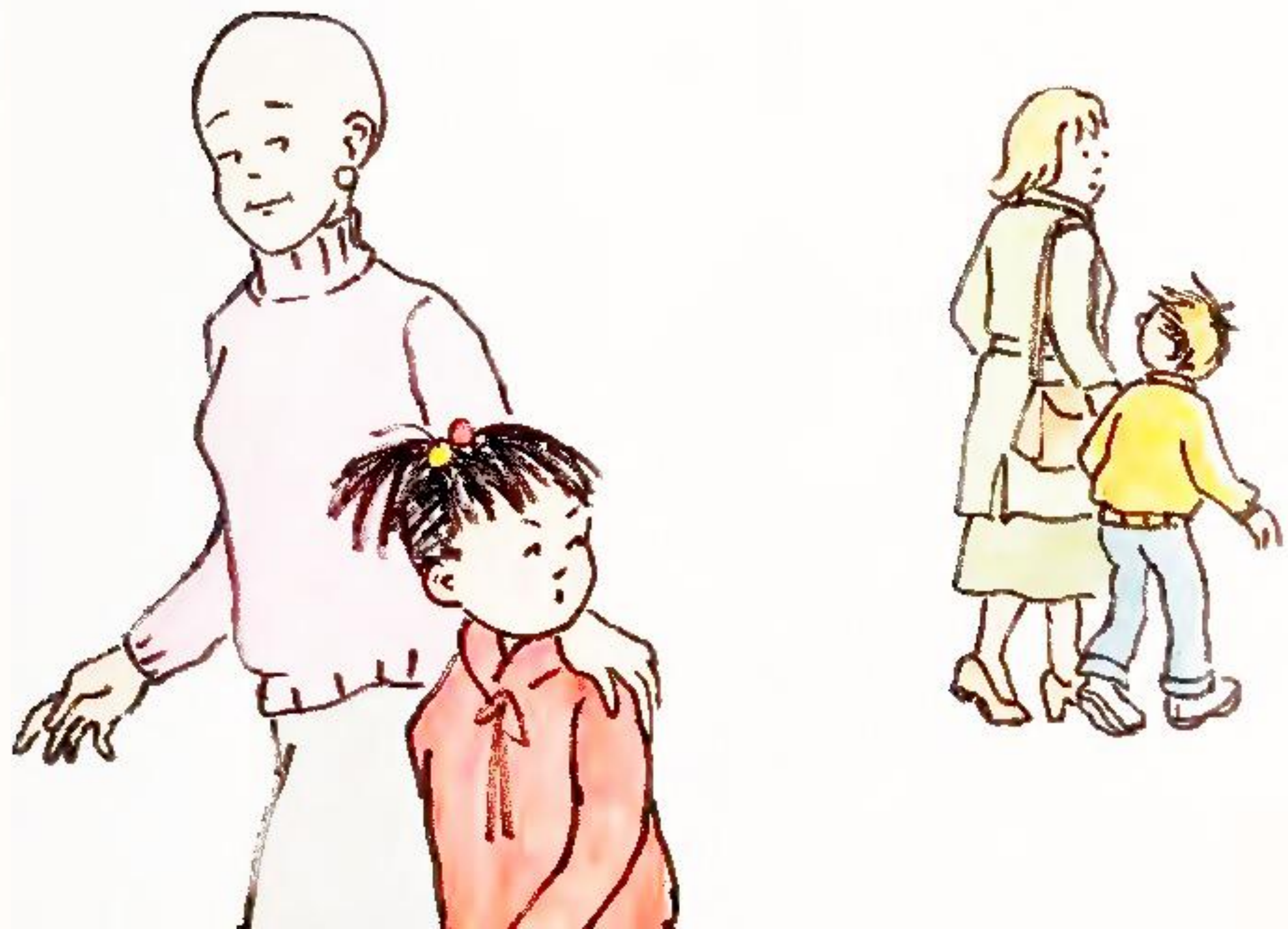
आज मैं खुश हूँ
क्योंकि माँ आज बेहतर महसूस कर रही है।
मैंने उसका हाथ थामा
और हम मोड़ तक जा
उस सड़क पर बढ़े जहाँ सारी दुकानें हैं
क्योंकि माँ को उनकी खिड़कियों की सजावट को देखना पसन्द है।

तब एक और मोड़ ले
हम मेरे स्कूल और गिरजे के सामने से गुज़रते हैं।
दरबान ने मुझे देख ज़ोर से 'हाय' कहा।
"यह मेरी माँ है," मैंने उसे बताया।
"हम टहलने निकले हैं।"
उसने अपनी टोपी उतारी और मुस्कराया।
हम बहुत धीरे-धीरे चले, क्योंकि माँ आसानी से थक जाती है।



मैंने पूरे समय यह ध्यान रखा कि कोई उसे धक्का न लगा दे,
स्केटबोर्ड पर तेज़ी से बढ़ते बच्चे,
भौंकता कुत्ता, जो हमारे बगल वाले घर में रहता है,
या ठेला गाड़ी से सामान पहुँचाने वाला।

तब मुझे अपनी स्कूल का एक लड़का
अपनी माँ के साथ जाता नज़र आया,
''मैंने चीख कर कहा, ''एलन यह मेरी माँ है।''
उसने ''हाय'' कहा, उसकी माँ ने भी।
जब वह आगे निकलने लगा,
मैंने उसे ऊँची आवाज़ में यह कहते सुना
''सारा की माँ के बाल क्यों नहीं है?''
मैंने साचा कि माँ यह न सुन ले,
पर लगा माँ ने सुन लिया है।
कल स्कूल में मैं एलन की नाक का भरता बना दूंगी
तब सब कहेंगे
''हाय एलन! तुम्हारी नाक क्यों नहीं है?''



जब तक हम तीसरे मोड़ तक पहुँचे,

माँ खुश हुई कि हम लगभग घर पहुँच गए हैं

क्योंकि वह सचमें थक चुकी थी।

मुझे याद आया

जब माँ को अस्पताल नहीं जाना पड़ता था

तब उसने पार्क में हुई एक दौड़ में हिस्सा लिया था

डैडी और मैं उसे बढ़ावा देने चीखे-चिल्लाए थे

और हमने उस पर कागज़ के गिलासों से पानी उछाला था।



मुझे याद है

जब मुझे घर में दबे पाँव नहीं चलना पड़ता था

और मैं जितना चाहती शोर मचा सकती थी।

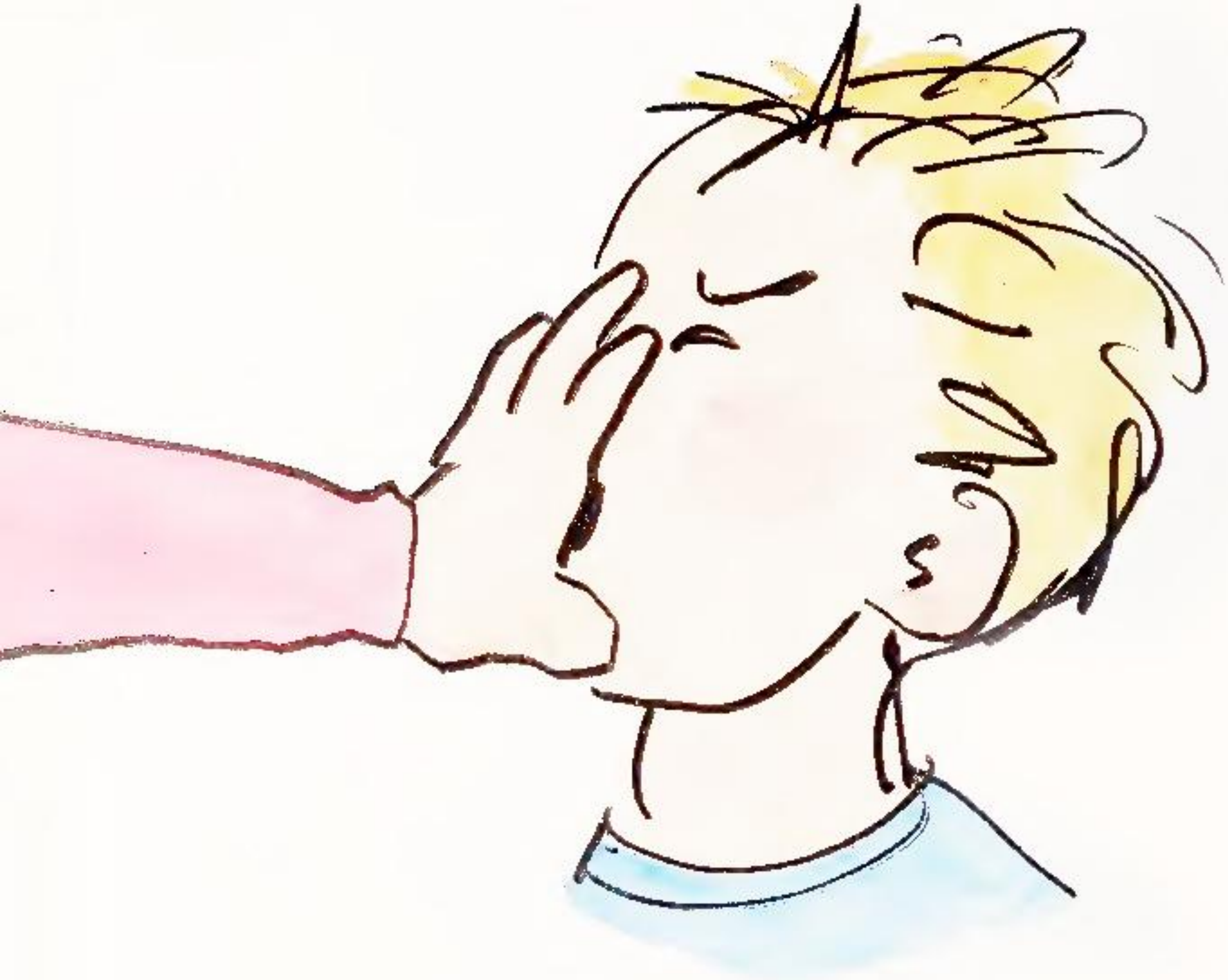


घर पहुँच कर

मैंने अपने कमरे का दरवाज़ा हौले से बन्द किया।

फिलहाल मैं माँ की गंजी खोपड़ी देखना नहीं चाहती।

मैं चाहती हूँ कि माँ के सिर पर सबकी तरह बाल हों।



अगले दिन जब मैंने एलन की नाक का भरता बनाने की कोशिश की

वह एक छोटे बच्चे की तरह रोया

और मिस्टर कारसन, हमारे शिक्षक ने

मुझे शान्त कुर्सी पर बैठने को कहा।

मैंने अपनी माँ का एक चित्र बनाया

पर वह ठीक नहीं बना

सो मैंने उसे फाड़ दिया।

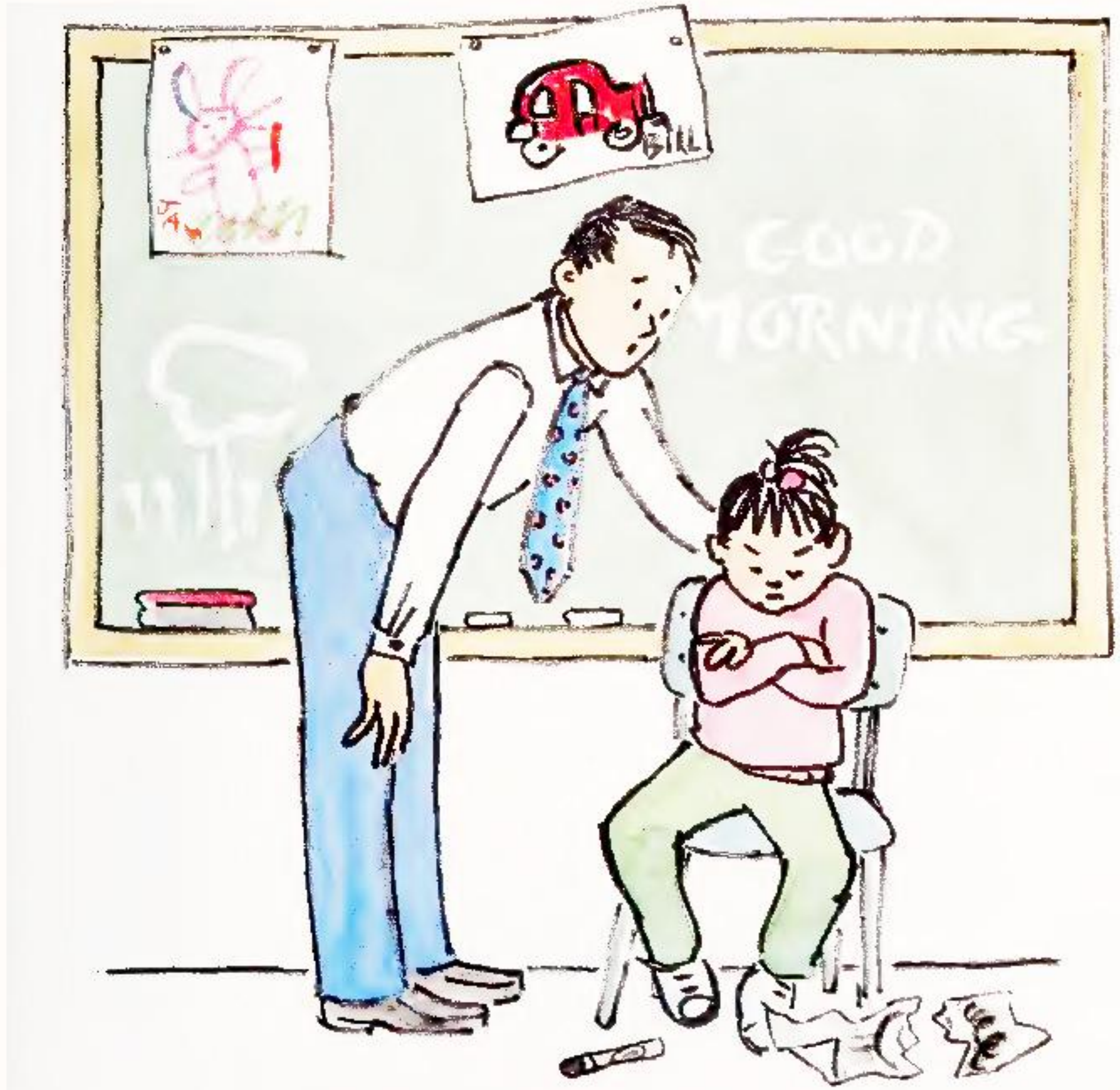
"तुम्हारे लिए यह मुश्किल समय है ना, सारा?"

मिस्टर कारसन ने कहा। "क्या तुम्हें कुछ परेशान कर रहा है?"

"कुछ परेशान नहीं कर रहा," मैं ज़ोर से बोली।

"खास कर एलन मुझे कतई परेशान नहीं कर रहा।"

"यह सुनकर मुझे खुशी हुई," मिस्टर कारसन ने कहा।



चार दिन बाद लूसी, मेरी बेबी सिटर मुझे स्कूल से लेने आई
उसने बताया कि माँ को अस्पताल जाना पड़ा है।
"उनके कुछ टेस्ट (जाँचे) होने वाली हैं," लूसी ने कहा।
उसने मेरा हाथ पकड़ने की कोशिश की, पर मैंने पकड़ने नहीं दिया।
"मेरी भी स्पैलिंग के टेस्ट (परीक्षा) होते हैं,
पर मुझे तो अस्पताल नहीं जाना पड़ता," मैंने कहा।
जब हम घर पहुँचे
मैं अपने कमरे में दौड़ी और धड़ाम से दरवाज़ा बन्द कर लिया।
मैं अपने बिस्तर पर चढ़ी और अपनी किताबें फर्श पर पटकीं
और ऊँची आवाज़ में संगीत बजाया।





जब डैडी घर लौटे
उन्होंने मुझे उठा कर अपनी गोदी में बिठाया
मैं रोना नहीं चाहती थी, सोचा था मैं बिलकुल नहीं रोऊँगी
पर जब रोना शुरु हो गया, मैं उसे रोक ही नहीं पाई।
डैडी ने छोटे बच्चे की तरह मुझे आगे-पीछे झुलाया,
कोई मुझे ऐसे देख ले उस तक की मुझे परवाह नहीं हुई।
"मुझे माँ को देखना है," मैंने कहा।
"वे पाँच दिन बाद घर आ जाएंगी," डैडी बोले।
"मुझे माँ को अभी देखना है," मैंने कहा।
डैडी ने मुझे झप्पी दी।
"मैं आज रात तुम्हारी माँ से बात करूंगा," डैडी ने कहा।

अगली दोपहर,

डैडी बस में बैठा मुझे अस्पताल ले गए।

हॉल में तमाम लोग आगे-पीछे भाग-दौड़ कर रहे थे।

डैडी ने मेरा हाथ पकड़ा।

हम लिफ्ट में चढ़े, जिसमें सफेद कोट पहने कई लोग थे,

उनके गलों में बिल्ले लटक रहे थे

उन बिल्लों पर उनके चेहरों के फोटो थे।

"क्या आप डॉक्टर हैं?" मैंने एक महिला से पूछा।

"हाँ हूँ," महिला ने कहा, "क्या तुम भी डॉक्टर हो?"

"ना, मैं तो अपनी माँ से मिलने आई हूँ," मैंने उन्हें बताया।





हम लिफ्ट से दसवीं मंज़िल पर उतरे और एक
लम्बे गलियारे में बढ़े जिसमें कई दरवाज़े थे।
अचानक मुझे लगा कि मैं माँ से मिलना नहीं चाहती।
अचानक मुझे यह डर लगा कि मेरी माँ सचमें बड़ी अजीब दिखेगी।
या फिर उन्होंने किसी और को माँ के बिस्तर पर लिटा दिया होगा
और माँ को कहीं और छिपा दिया होगा
और मैं माँ को ढूंढ़ ही नहीं सकूंगी।
मैं रुक गई।
डैडी भी रुक गए।
"मुझे माँ से नहीं मिलना," मैंने कहा। "मुझे घर जाना है।"
डैडी अपने घुटनों पर टिक गए, मेरे बिलकुल पास।

"सब ठीक है," डैडी बोले।
"माँ वैसी ही दिखती है, जेसी पिछले सप्ताह दिखती थी,
सिवा इसके कि उनके पास एक पहियों वाला स्टैण्ड है,
जिस पर प्लास्टिक की एक थैली लटकी है
थैली में एक पतली नली है जो माँ की बाँह तक आती है।
थैली में दवा है जो माँ को ठीक करेगी
वह दवा उस नली से बूंद-बूंद टपकती है।"
"क्या उस नली से दर्द होता है?" मैंने जानना चाहा।
"नहीं।"
"क्या पक्का मालूम है कि माँ अभी भी वहीं है?"
"मुझे पक्का पता है," डैडी बोले, "तैयार?"
"हाँ, लगता तो यही है," मैंने जवाब दिया।

फिर डैडी ने दरवाजे को धक्का देकर खोला।

और वहाँ पर माँ थीं, मुसकुराती हुई।



मैंने स्टैण्ड को देखा, तब नली को,

और नानी के भेजे फूलों को, और माँ के बिस्तर के पास

मेरी और डैडी की तस्वीर को भी।

माँ के बिस्तर के पास एक लैम्प था

और नर्स को बुलाने के लिए एक घंटी।

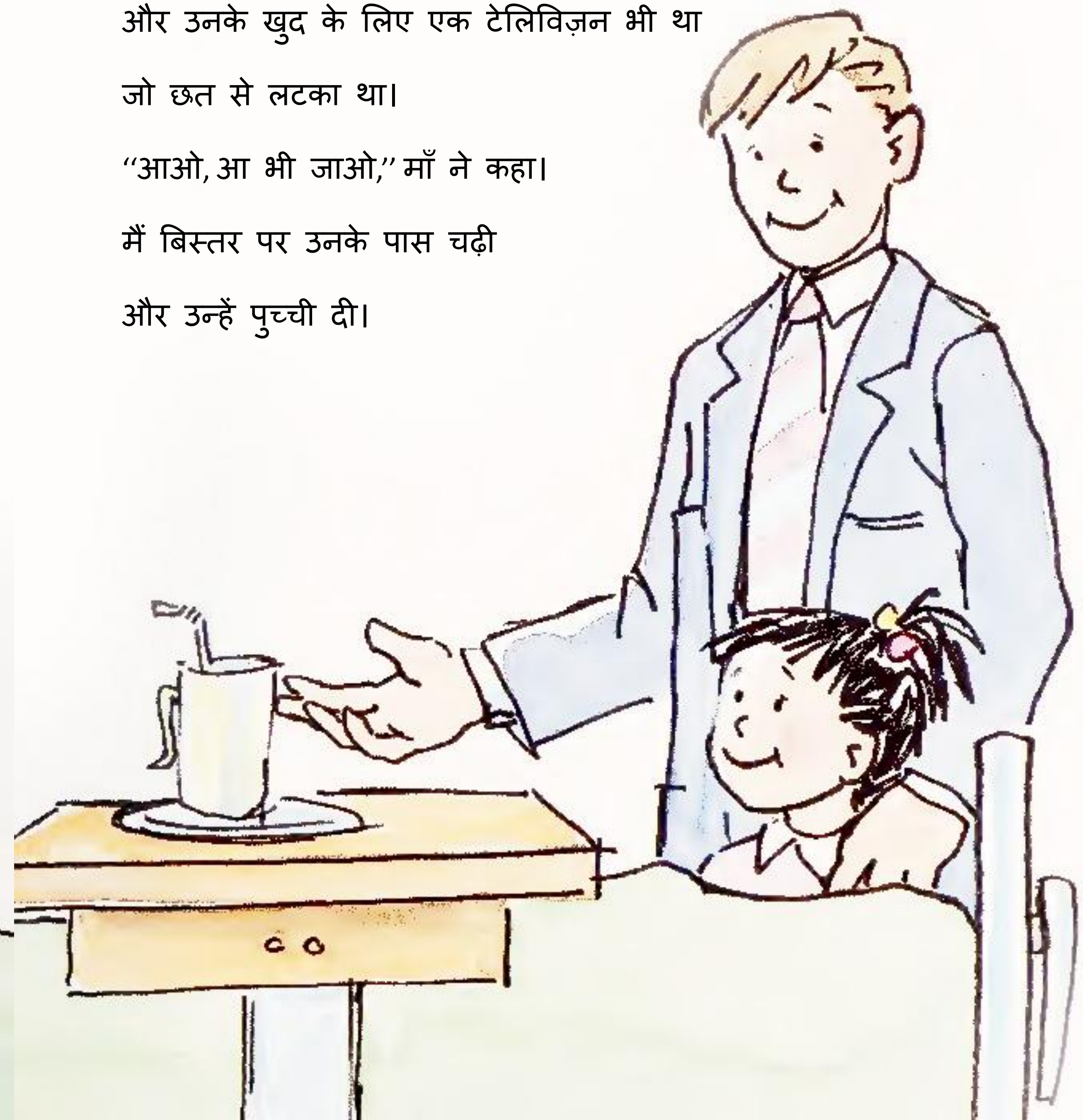
और उनके खुद के लिए एक टेलिविज़न भी था

जो छत से लटका था।

"आओ, आ भी जाओ," माँ ने कहा।

मैं बिस्तर पर उनके पास चढ़ी

और उन्हें पुच्ची दी।



''लोग सोचते हैं तुम बालों के बिना बड़ी अजीब लगती हो,'' मैंने कहा।

''लगती तो अजीब ही हूं,'' माँ बोली।

''पर मैं नहीं चाहती कि तुम अजीब लगो।''

''मैं नकली बालों की विग पहन सकती हूँ।''

''वह तो और अजीब लगेगी,'' मैंने कहा।

हम दोनों देर तक इस बारे में सोचते रहे।

''तुम मेरी बेसबॉल वाली टोपी पहन सकती हो,'' मैंने सुझाया।

''ख़याल तो अच्छा है,'' माँ ने कहा।

''पर क्या वह मुझे आएगी?''

''उसके पीछे एक हिस्सा है

जिससे उसे बड़ा किया जा सकता है,'' मैंने माँ को बताया।

''तुम उसे तब तक पहन सकती हो, जब तक गर्मियों

में हमारी प्रैक्टिस नहीं शुरू हो जाती,

तब मुझे वह वापस चाहिए होगी।''

''हो सकता है मुझे इतनी देर तक उसकी ज़रूरत ही न पड़े,'' मेरी माँ ने कहा।



माँ से मिलने के बाद डैडी और मैं घर लौटे,

हमने खाना खाया और मैंने डैडी को अपनी बेसबॉल वाली टोपी दी,

तकि वे अगले दिन उसे माँ को दे दें।

तब डैडी ने मुझे एक किताब पढ़ कर सुनाई और उसके बाद मुझे बिस्तर पर

सुला कर चादर ठीक से उढ़ा दी।

"मुझे माँ की कमी खलती है," मैंने कहा

"मुझे भी," डैडी बोले।

"माँ घर कब आएगी?"

"जल्दी ही।"

"जल्दी मतलब कब?"

"एक-दो दिन में।"

"और तब वह कभी बीमार नहीं होगी ना?" मैंने पूछा।

"बेटा वह हर दिन थोड़ी-थोड़ी बेहतर होती जा रही है।"

"तो उसके बाल वापस उग जाएंगे ना?" मैंने कहा।

"और तब वह मुझे स्कूल से घर लाने आ सकेगी।"

"बिलकुल," डैडी ने कहा।



माँ घर लौट आई है,

वह मेरी लिटिल लीग वाली टोपी पहने है,

जिसके सामने की ओर 'वेस्ट साइड' लिखा है।

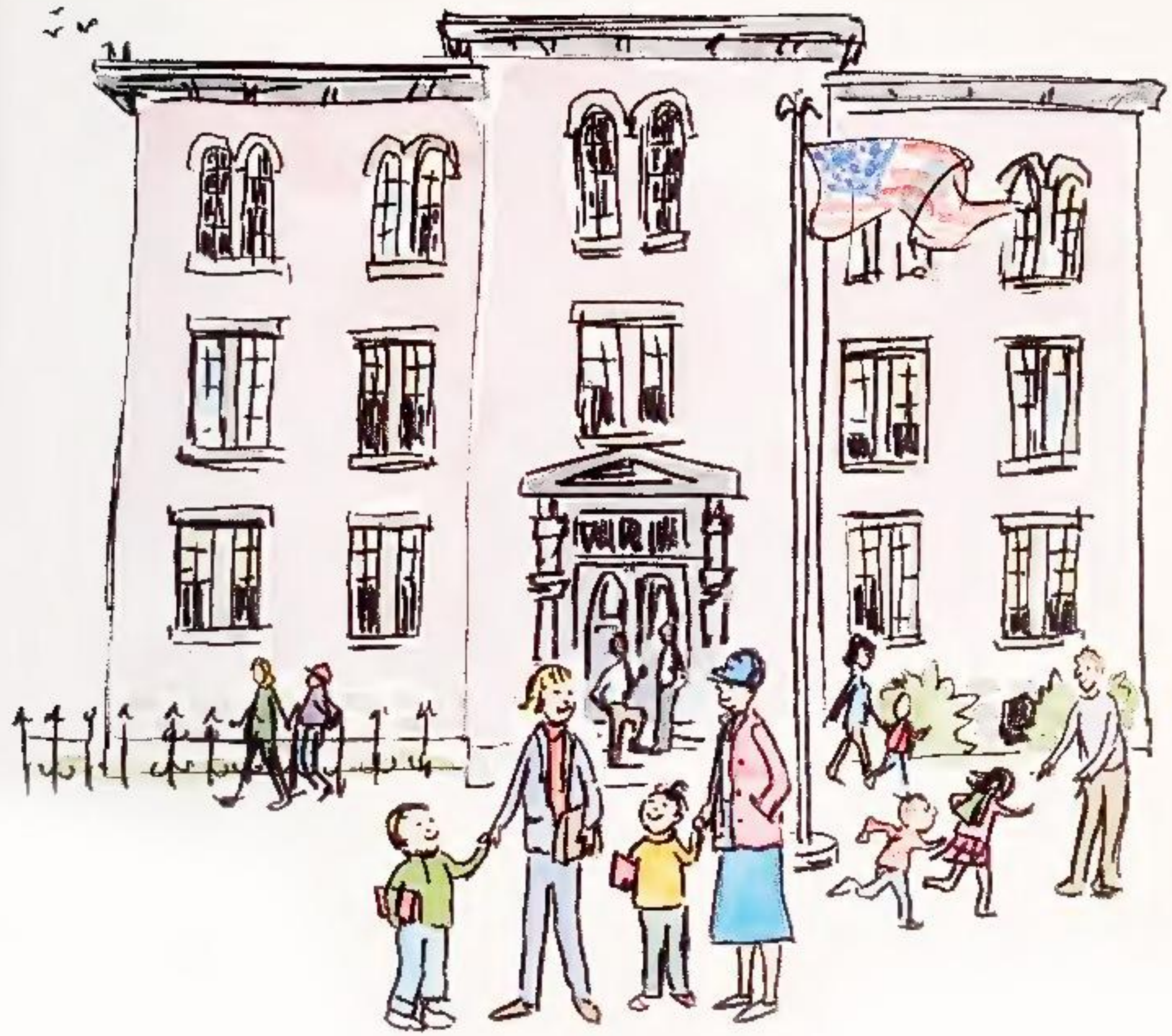
टोपी माँ पर फब रही थी।

अपने आराम वाले सप्ताह में माँ वह टोपी बिस्तर में भी पहने रही।



माँ जिस दिन पहली बार डाक लाने

नीचे लॉबी में उतरीं, तब भी उसे पहने थी।



दो सप्ताह बाद भी माँ वही टोपी पहने थी

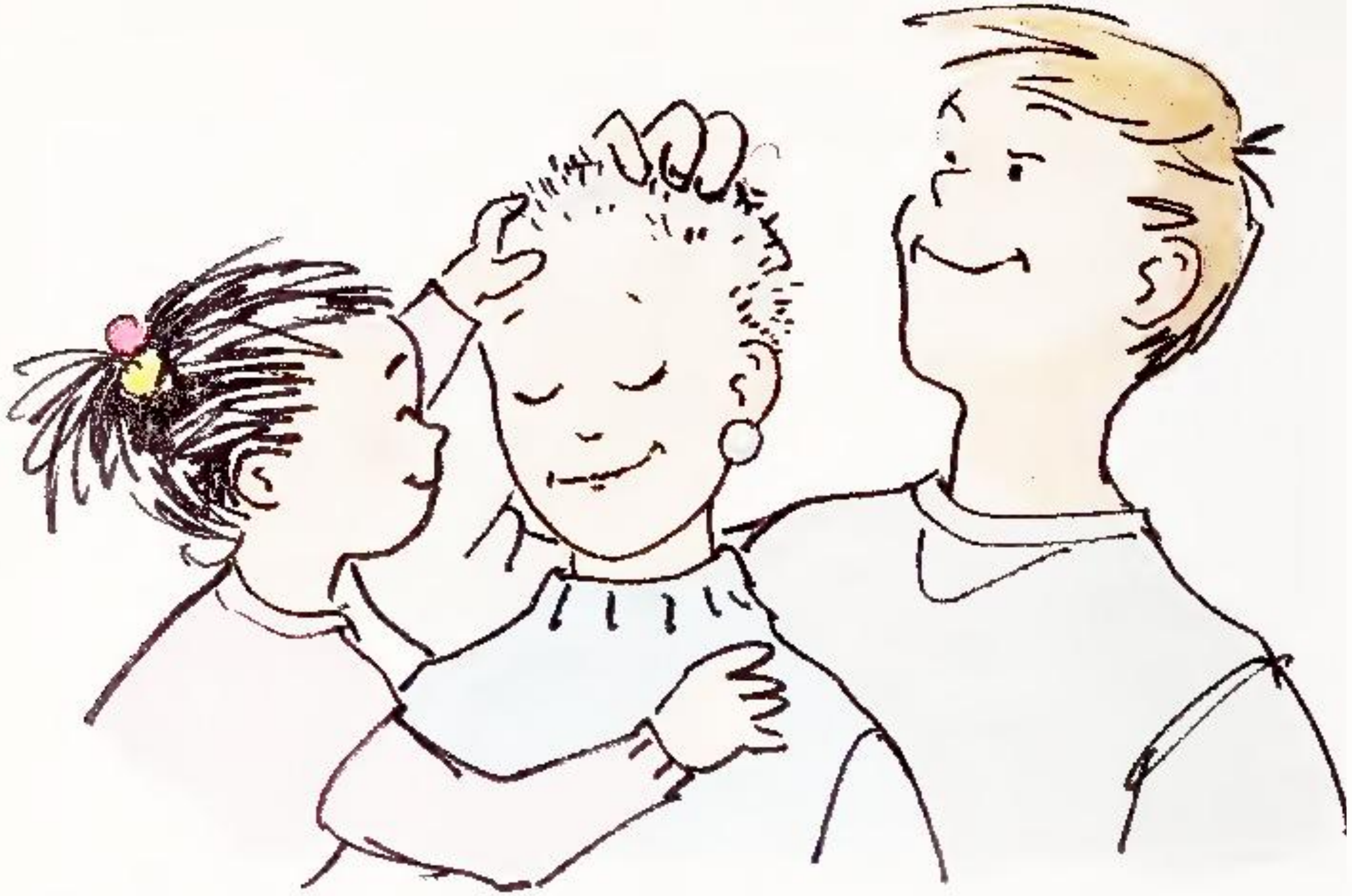
जब वे मुझे पहली बार स्कूल से लेने आईं।

किसीने उनके बालों को अजीब नहीं कहा।

माँ को अब भी दोपहर को झपकी लेनी पड़ती है।

मुझे घर में दबे पाँव चलना पड़ता है।

पर उनका चेहरा अब ज़र्द नहीं दिखता।



छोटे-छोटे कंटीले बाल माँ के सिर पर उग आए हैं।

"तुम एक साही जैसी दिखती हो," मैंने कहा।

माँ हंस पड़ी।

डैडी ने माँ का सिर चूमा।

"अरे रे!" डैडी बोले, "कांटेदार झाउ चूहे जैसी ज्यादा लग रही है, तुम्हारी माँ।"

माँ के बाल तेज़ी से बढ़ रहे हैं।

वे पहले से ज़्यादा काले और घुंघराले हैं।

माँ को अब टोपी पहनने की ज़रूरत नहीं है

पर वह फिर भी उसे पहनती है, क्योंकि उसे वह पसन्द है।

वह कहती है कि टोपी उसके सिर को गरम रखती है।

अब जब माँ अस्पताल जाती है

उसे वहाँ रात नहीं बितानी पड़ती।

वह दोपहर को ही घर आ जाती है

और सीधे बिस्तर पर लेट जाती है।

अगली सुबह वह

उठ कर मुझे स्कूल पहुँचाती है।

वह लम्बी सैरों पर जाती है

और जल्द ही माँ और डैडी फिर से दौड़ना शुरु कर देते हैं।

डैडी धीमे-धीमे दौड़ते हैं, ताकि माँ साथ में दौड़ सके।



स्कूल के आख़िरी दिन मैं एलन से कहती हूँ,

"मेरी माँ के सिर पर अब बाल हैं।"

"तो क्या?" एलन कहता है, "मेरी माँ के भी हैं।"

मैं ठहाका लगा हंस पड़ती हूँ। मेरी माँ भी।

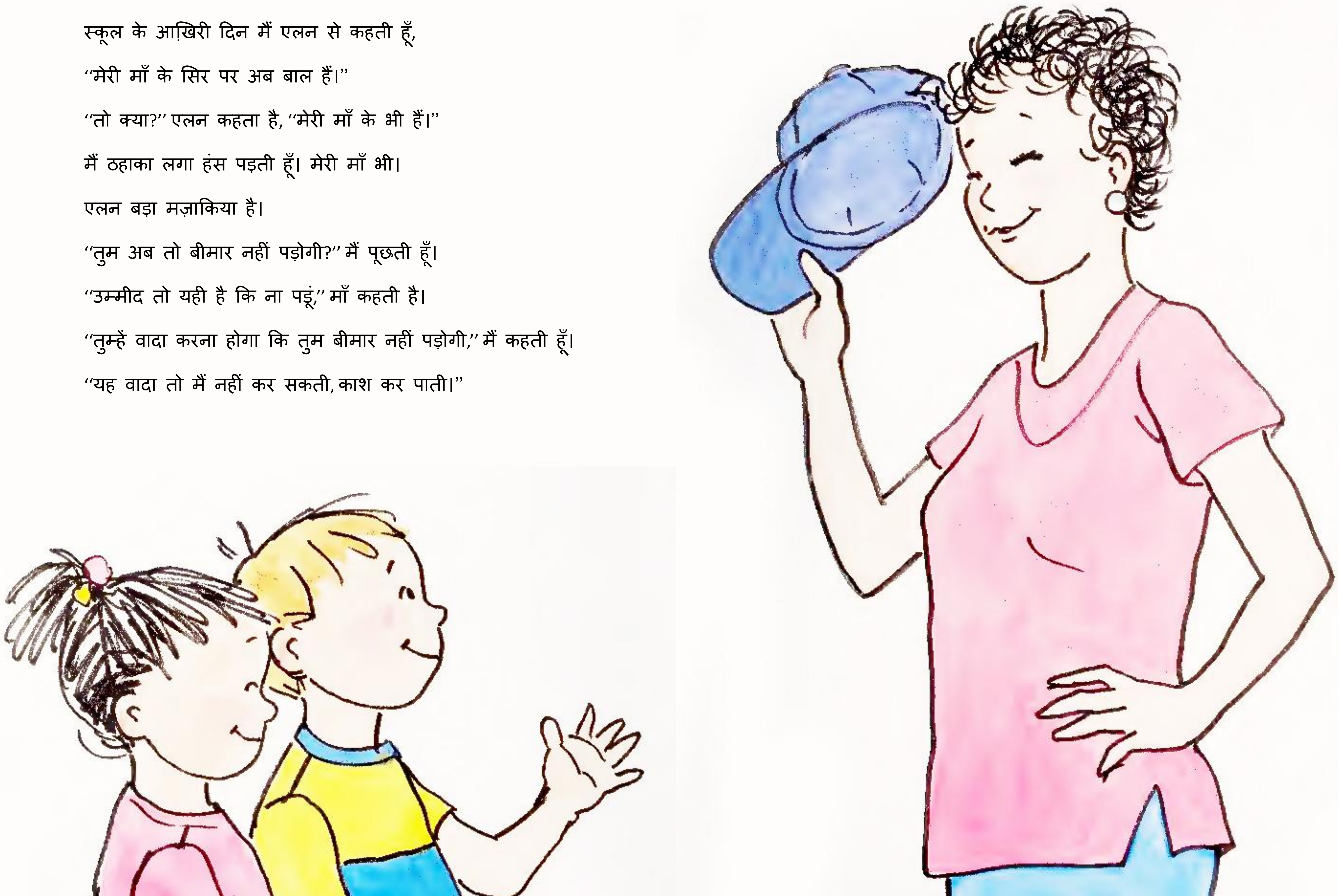
एलन बड़ा मज़ाकिया है।

"तुम अब तो बीमार नहीं पड़ोगी?" मैं पूछती हूँ।

"उम्मीद तो यही है कि ना पड़ूं," माँ कहती है।

"तुम्हें वादा करना होगा कि तुम बीमार नहीं पड़ोगी," मैं कहती हूँ।

"यह वादा तो मैं नहीं कर सकती, काश कर पाती।"



"तो किस चीज़ का वादा कर सकती हो?" मैंने पूछा।

"मैं वादा कर सकती हूँ कि आज मैं पार्क में दो मील दौड़ूंगी

और यह कि हम घर लौटते समय आइसक्रीम के लिए रुकेंगे।

और हम आज रात शारलैट और विल्बर के बारे में किताब पढ़ेंगे।"

"हाँ," मैंने कहा, "कल हम और वादों के बारे में सोचेंगे।

"हाँ," माँ ने कहा,

"हम कल और नए वादों के बारे में सोचेंगे।"





एलिज़ाबैथ विनथ्रॉप चालीस से अधिक बाल पुस्तकें रच चुकी हैं। उन्होंने एज़ द क्रो फ्लाइस् और द लिटिल हम्पबैक्ड हॉर्स भी लिखी है। वे न्यू यॉर्क शहर में रहती हैं।

बैटसी लेविन ने पच्चीस से अधिक लोकप्रिय बाल पुस्तकों को चित्रित किया है, जो उन्होंने स्वयं लिखी भी थीं। उन्होंने हाल में मेरी स्किलिंग्स प्रिग्गर की रचना आंट मिनी ग्रैनहैन के चित्र बनाए हैं। वे अपने चित्रकार पति टैड लेविन के साथ ब्रुकलिन, न्यू यॉर्क में रहती हैं।